National Handloom Day 2026 जानें भारत की सबसे मशहूर साड़ियां!

विषय सूची (Table of Contents):

>> नेशनल हैंडलूम डे 2026 भारतीय हथकरघा विरासत और साड़ियों की अनूठी दुनिया...
>> भारतीय संस्कृति और हथकरघा कला का महत्व...
>> उत्तर भारत की शान बनारसी सिल्क, फुलकारी और बांधनी का आकर्षण...
>> उत्तर प्रदेश - विश्व प्रसिद्ध बनारसी सिल्क साड़ी...
>> राजस्थान - बंधेज, लहरियां और टाई एंड डाई...
>> पंजाब और हरियाणा - फुलकारी और रेशम धुरिया साड़ी...
>> मध्य और पश्चिम भारत की कला चंदेरी, पटोला और कुनबी साड़ियों का जादू...
>> मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ - चंदेरी और कोसा सिल्क...
>> गुजरात - शाही पटोला और इकत प्रिंट साड़ी...
>> गोवा - पारंपरिक कुनबी साड़ी...
>> पूर्वी भारत की पारंपरिक बुनाई भागलपुरी टसर, बालुचरी और जामदानी...
>> बिहार और झारखंड - भागलपुरी और आदिवासी टसर सिल्क...
>> पश्चिम बंगाल - बालुचरी, जामदानी और कॉटन साड़ियां...
>> दक्षिण भारत की शाही पहचान कांजीवरम, कसावु और पोचमपल्ली साड़ियां...
>> तमिलनाडु - शाही कांजीवरम (Kanjivaram) सिल्क साड़ी...
>> केरल - पारंपरिक कसावु साड़ी...
>> तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक - पोचमपल्ली, उप्पडा जामदानी और इल्कल...
>> पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों की हैंडलूम विरासत मूंगा सिल्क से लेकर कुल्लू पट्टी...
>> असम - स्वर्णिम मूंगा सिल्क साड़ी...
>> हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड - कुल्लू पट्टी और पंचाचूली...
>> मेघालय, सिक्किम और नागालैंड - एरी सिल्क, लेप्चा व नागा ड्रेप...
>> हैंडलूम साड़ियां क्यों हैं खास भारतीय कारीगरों की मेहनत और संस्कृति का प्रतीक...
>> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

नेशनल हैंडलूम डे 2026: भारतीय हथकरघा विरासत और साड़ियों की अ

भारत की सांस्कृतिक पहचान और समृद्ध इतिहास का एक जीता-जागता प्रमाण यहां का पारंपरिकहैंडलूम (हथकरघा) उद्योगहै। हर साल की तरहNational Handloom Day 2026के अवसर पर देश भर के शिल्पकारों, बुनकरों और पारंपरिक वस्त्र कला की सराहना की जा रही है। भारत के दूर-दराज गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में रहने वाले कुशल कारीगर सदियों पुरानी तकनीकों से

बेहद खूबसूरत साड़ियां, सूट और फैब्रिक तैयार करते हैं।

जब भी हैंडलूम का जिक्र आता है, तो हर भारतीय के जेहन में सबसे पहले रेशमी (Silk) और सूती (Cotton) साड़ियों की मनमोहक तस्वीरें उभरती हैं। भारत के अलग-अलग राज्यों में हैंडलूम साड़ियों के रूप, बुनाई की शैली और फैब्रिक का अपना एक अनोखा और विशिष्ट इतिहास है। यदि आप भी हैंडलूम साड़ियों के शौकीन हैं या देश की इस समृद्ध विरासत को समझना चाहते हैं, तो यह विस्तृत गाइड आपके लिए बेहद उपयोगी साबित होगी।

भारतीय संस्कृति और हथकरघा कला का महत्व

हथकरघा उद्योग न केवल लाखों भारतीय कारीगरों की आजीविका का मुख्य साधन है, बल्कि यहभारत की विविधता में एकताका प्रतीक भी है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक, प्रत्येक राज्य की हैंडलूम साड़ी वहां की परंपराओं, प्राकृतिक वातावरण और पौराणिक कथाओं को अपने धागों में पिरोती है।

उत्तर भारत की शान: बनारसी सिल्क, फुलकारी और बांधनी का आकर्षण

उत्तर भारत की वस्त्र परंपरा अपनी भव्यता, जटिल कढ़ाई और जीवंत रंगों के लिए पूरी दुनिया में जानी जाती है। राजसी शादियों से लेकर धार्मिक त्योहारों तक, उत्तर भारतीय राज्यों की साड़ियों की मांग हमेशा बनी रहती है।

उत्तर प्रदेश - विश्व प्रसिद्ध बनारसी सिल्क साड़ी

उत्तर प्रदेश का वाराणसी शहर अपनी ऐतिहासिकबनारसी सिल्क साड़ीके लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। इन साड़ियों पर सोने और चांदी के रेशमी धागों (Zari and Brocade) से बारीक काम किया जाता है। एक पारंपरिक बनारसी साड़ी को हथकरघे पर तैयार करने में बुनकरों को कई महीनों या कभी-कभी सालों का समय लग जाता है।

राजस्थान - बंधेज, लहरियां और टाई एंड डाई

रंग-बिरंगे राजस्थान में साड़ियों की कई आकर्षक शैलियां प्रचलित हैं। इनमें सेबांधनी (Bandhani),लहरियां (Leheriya)औरटाई एंड डाई (Tie Dye)तकनीक से तैयार साड़ियां महिलाओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हैं। ये साड़ियां अपने बारीक पैटर्न और चमकदार रंगों के लिए जानी जाती हैं।

पंजाब और हरियाणा - फुलकारी और रेशम धुरिया साड़ी

पंजाब की पहचान उसकी जीवंत और कढ़ाईदारफुलकारी (Phulkari)कला से है, जिसका उपयोग दुपट्टों के साथ-साथ साड़ियों पर भी खूबसूरती से किया जाता है। वहीं, हरियाणा में हल्के सिल्क और कॉटन ब्लेंड से तैयार की जाने वालीरेशम धुरिया (Resham Dhuriya)साड़ियां अपनी सादगी और आरामदेह बनावट के लिए जानी जाती हैं।

मध्य और पश्चिम भारत की कला: चंदेरी, पटोला और कुनबी साड़ियों

भारत के मध्य और पश्चिमी क्षेत्र भौगोलिक दृष्टिकोण से जितने खास हैं, उतने ही अपनी पारंपरिक हथकरघा बुनाई के लिए भी मशहूर हैं।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ - चंदेरी और कोसा सिल्क

मध्य प्रदेश कीचंदेरी साड़ियां (Chanderi Sarees)अपनी हल्की बनावट, पारदर्शी चमक और गोटा-पत्ती डिजाइन के लिए जानी जाती हैं। दूसरी ओर, छत्तीसगढ़ काकोसा सिल्क (Kosa Silk)अपनी टिकाऊ गुणवत्ता और प्राकृतिक रेशमी चमक के कारण काफी पसंद किया जाता है।

गुजरात - शाही पटोला और इकत प्रिंट साड़ी

गुजरात कीपटोला साड़ी (Patola Saree)डबल इकत तकनीक से बनाई जाने वाली बेहद जटिल और कीमती साड़ियों में से एक है। पाटन शहर में तैयार होने वाली इन साड़ियों के दोनों तरफ एक जैसी ही डिजाइन दिखती है। यह राजसी पोशाक हथकरघा बुनाई का बेजोड़ नमूना है।

गोवा - पारंपरिक कुनबी साड़ी

तटीय राज्य गोवा अपनी पारंपरिककुनबी साड़ी (Kunbi Saree)के लिए जाना जाता है। मुख्य रूप से आदिवासी समुदाय द्वारा बुनी जाने वाली यह कॉटन साड़ी लाल रंग के चेक पैटर्न (Red Checkered Pattern) में होती है और इसे काफी टिकाऊ माना जाता है।

पूर्वी भारत की पारंपरिक बुनाई: भागलपुरी टसर, बालुचरी और जामद

पूर्वी भारत में निर्मित साड़ियां अपने पौराणिक कथानक, कलात्मक आकृतियों और प्राकृतिक फैब्रिक के लिए प्रसिद्ध हैं।

बिहार और झारखंड - भागलपुरी और आदिवासी टसर सिल्क

बिहार का भागलपुर शहर अपनीभागलपुरी टसर सिल्क (Bhagalpuri Tussar Silk)साड़ियों के लिए जाना जाता है, जिसे सिल्क सिटी की पहचान भी प्राप्त है। वहीं, झारखंड में स्थानीय आदिवासियों द्वारा हाथ से तैयार की जाने वालीटसर सिल्क साड़ियांअपनी प्राकृतिक बनावट और टिकाऊपन के लिए लोकप्रिय हैं।

पश्चिम बंगाल - बालुचरी, जामदानी और कॉटन साड़ियां

पश्चिम बंगाल कीबालुचरी साड़ी (Baluchari Saree)के पल्लू पर महाभारत और रामायण के पौराणिक दृश्यों की जटिल बुनाई की जाती है। इसके अलावा, महीन सूती धागों से बनने वालीजामदानी (Jamdani)और ढाकाई साड़ियां पूरे देश में डिमांड में रहती हैं।

दक्षिण भारत की शाही पहचान: कांजीवरम, कसावु और पोचमपल्ली साड़

दक्षिण भारत में सिल्क साड़ियों का एक अलग ही धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। यहां की साड़ियां अपनी भारी जरी, उत्कृष्ट बॉर्डर और समृद्ध इतिहास के लिए जानी जाती हैं।

तमिलनाडु - शाही कांजीवरम (Kanjivaram) सिल्क साड़ी

तमिलनाडु के कांचीपुरम शहर में बनने वालीकांजीवरम साड़ीभारतीय सिल्क साड़ियों की रानी मानी जाती है। शुद्ध शहतूत सिल्क (Mulberry Silk) और सोने-चांदी की जरी से बुनी जाने वाली यह साड़ी बेहद मजबूत और शाही लुक देती है।

केरल - पारंपरिक कसावु साड़ी

केरल की पारंपरिककसावु साड़ी (Kasavu Saree)अपनी सादगी के लिए जानी जाती है। सफेद या ऑफ-व्हाइट कॉटन साड़ी पर सुनहरी जरी का बॉर्डर (Golden Border) इसकी मुख्य खासियत है, जिसे विशेष अवसरों और ओणम पर्व पर पहना जाता है।

तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक - पोचमपल्ली, उप्पडा जामदान

तेलंगाना कीपोचमपल्ली (Pochampally)साड़ी अपनी इकत ज्योमेट्रिक डिजाइनों के लिए विख्यात है। आंध्र प्रदेश कीउप्पडा जामदानी (Uppada Jamdani)अपनी हल्की और बारीक बुनाई के लिए जानी जाती है, जबकि कर्नाटक कीइल्कल साड़ी (Ilkal Saree)अपने विशेष पल्लू डिजाइन और मजबूती के लिए पहचानी जाती है।

पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों की हैंडलूम विरासत: मूंगा सिल्क

भारत के पहाड़ी और पूर्वोत्तर राज्य अपनी अनूठी प्रकृति की तरह ही अनोखे और विशिष्ट फैब्रिक का निर्माण करते हैं।

असम - स्वर्णिम मूंगा सिल्क साड़ी

असम कीमूंगा सिल्क (Muga Silk)साड़ी दुनिया में सबसे दुर्लभ और कीमती मानी जाती है। इस प्राकृतिक सुनहरे रंग के सिल्क की खासियत यह है कि हर बार धोने के बाद इसकी चमक और अधिक बढ़ जाती है।

हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड - कुल्लू पट्टी और पंचाचूली

हिमाचल प्रदेश मेंकुल्लू पट्टी (Kullu Patti)डिजाइन वाली साड़ियां और शॉल तैयार की जाती हैं, जो स्थानीय ऊन और सिल्क के मिश्रण से बनती हैं। वहीं, उत्तराखंड में हथकरघा कारीगरों द्वारा तैयार की जाने वालीपंचाचूली (Panchachuli)साड़ियां अपने पहाड़ी पैटर्न के लिए मशहूर हैं।

मेघालय, सिक्किम और नागालैंड - एरी सिल्क, लेप्चा व नागा ड्रेप

मेघालय कीएरी सिल्क (Eri Silk), सिक्किम की पारंपरिकलेप्चा (Lepcha)बुनाई और नागालैंड की टाइट-वीव ड्रेप साड़ियां पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध हथकरघा परंपरा को प्रदर्शित करती हैं।

हैंडलूम साड़ियां क्यों हैं खास: भारतीय कारीगरों की मेहनत और

मशीनों द्वारा निर्मित कपड़ों के दौर में भी हैंडलूम साड़ियों का आकर्षण कम नहीं हुआ है। हथकरघा पर बनी साड़ियां न केवल पर्यावरण-अनुकूल (Eco-friendly) होती हैं, बल्कि इनका हर धागा कारीगरों की महीनों की अनथक मेहनत, समर्पण और कलात्मकता का परिणाम होता है।National Handloom Day 2026हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने देश के बुनकरों का समर्थन करना चाहिए और इस प्राचीन धरोहर को भावी पीढ़ियों के लिए सहेज कर रखना चाहिए।

>> ट्रंप की चाल: भारत को तेल और पाकिस्तान द्वीप प्लान का सच!

महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस हर साल 7 अगस्त को भारत में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य देश के बुनकरों को सम्मानित करना और हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देना है।

तमिलनाडु की कांजीवरम (कांचीपुरम) सिल्क साड़ी और गुजरात की डबल इकत पटोला साड़ी भारत की सबसे कीमती और शाही साड़ियों में शामिल हैं।

असम का मूंगा सिल्क प्राकृतिक रूप से सुनहरे रंग का होता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे जितने बार धोया जाता है, इसकी चमक और ज्यादा बढ़ती है।

केरल की कसावु साड़ी सफेद या ऑफ-व्हाइट रंग की कॉटन सिल्क साड़ी होती है, जिस पर जरी का एक शानदार गोल्डन बॉर्डर बना होता है।

असली हैंडलूम साड़ी पर सरकार द्वारा जारी Handloom Mark या Silk Mark का टैग होता है। आप आधिकारिक पोर्टल पर जाकर इसका स्टेटस भी जांच सकते हैं।

गोवा की कुनबी साड़ी मुख्य रूप से कॉटन फैब्रिक से लाल रंग के चेक पैटर्न में बुनी जाती है। इसे स्थानीय आदिवासी बुनकरों द्वारा तैयार किया जाता है।